दैनिक भास्कर

city life

CHANDIGARH, THURSDAY, 11/08/2016

इंसान की पहली कलाकृति 'रॉक आर्ट' का सेलिब्रेशन

ROCK ART

बुधवार को पीयू के डिपार्टमेंट ऑफ एंशिएंट इंडियन हिस्ट्री, कल्चर और आर्कियोलॉजी में 'द वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट एग्जिबीशन' की शुरुआत हुई।

सिटी रिपोर्टर • यहां सेलिब्रेशन था। इंसान द्वारा तैयार की गई पहली कलाकृति 'रॉक आर्ट' का। जो हमें हमारे पुरातन इतिहास के बारे में बताती है। उस वक्त का इतिहास, जब कोई स्क्रिप्ट नहीं थी। उस वक्त की यह कला ही एक माध्यम है। जिससे हम उनके जीवन के बारे में थोड़ा बहुत समझ सकते हैं। इसलिए यह कहना गलत नहीं होगा कि ट्राइबल ट्रेडिशंस आज भी जीवित हैं। जिन्हें संभाल कर रखा गया है। ताकि आने वाली पीढ़ियों को इंसानों की इस पहली क्रिएटिविटी के बारे में पता चल सके। अगर आप भी इस क्रिएटिविटी को देखना चाहते हैं तो 'द वर्ल्ड ऑफ रॉक आर्ट एग्जिबीशन' में जा सकते हैं।

बुधवार को पीयू के डिपार्टमेंट ऑफ एंशिएंट इंडियन हिस्ट्री, कल्चर और आर्कियोलॉजी में इस एग्जिबीशन की शुरुआत हुई। इसे इंदिरा गांधी नेशनल सेंटर फॉर द आर्ट्स नई दिल्ली (आईजीएनसीए) ने पीयू के डिपार्टमेंट ऑफ एंशिएंट इंडियन हिस्ट्री, कल्चर और आर्कियोलॉजी के सहयोग से आयोजित किया है। यह 10 सितंबर तक चलेगी।

आईजीएनसीए के प्रोजेक्ट डायरेक्टर डॉ. बीएल मल्ला ने बताया कि बहुत पहले से ही इंसानों ने अपने आसपास की दुनिया का अभिलेख करना शुरू किया। वह प्राकृतिक गुफाओं में रहा जिसे उसने पेंटिंग्स और नक्काशी से सजाया। विषयों में उन सबको शामिल किया जिसे उसने अपनी आसपास की प्रकृति और जीवन में देखा। लिखित युग के पहले की यह कला हमें पुरातन लोगों की धारणाओं, दुनिया को देखने का उनका नजरिया, उनकी सोच, उनके विश्वास और भावनाओं का व्याख्यान करती हैं। यह सभी आर्ट करीब 40 हजार साल पहले की हैं।

स्कूल के बच्चों ने कैनवास पर उकेरा रॉक आर्ट

बुधवार को स्कूल के बच्चों की वर्कशॉप 'इंप्रेशंस' आयोजित की गई। इसमें चंडीगढ़ के पांच स्कूलों के 100 बच्चों ने हिस्सा लिया। खास बात यह है कि यहां बच्चों को पेंटिंग बनाने के लिए कोई विषय नहीं दिया गया था। इन बच्चों ने पहले पूरी एग्जिबीशन में लगे रॉक आर्ट को देखा और फिर उसमें से जो पसंद आया, उसे अपने कैनवास पर उकेरा।

• ओडिसा के लांजिया सोरा कुटुंब के गांव का दृश्य जो उनकी जीवनशैली से रूबरू कराता है।

एग्जिबीशन में यह

यहां हिमाचल प्रदेश स्थित स्पीति का निमालोक्सा, तमिलनाडु का किलवालाई, लद्दाख स्थित दोमखार की नदी का इलाका, उत्तर प्रदेश स्थित मिर्जापुर का रॉक आर्ट, राजस्थान स्थित बूंदी का भीमलत सहित कई तरह के आर्ट वर्क शामिल हैं। एग्जिबीशन में लोगों की आज की जीवनशैली कैसी है, उसे भी दिखाया गया है।

• गैंडो और शेरनियों का सामूहिक चित्रण चौवेंत गुफा, वल्लों- पोंट-द अर्क अर्दैंचे फ्रांस।

• कप मार्क्स (कुपयूल्स), ऑस्ट्रेलिया।

इन सभी देशों का रॉक आर्ट शामिल | इस एग्जिबीशन में अंटार्कटिका को छोड़कर एशिया, अफ्रीका, नॉर्थ अमेरिका, साउथ अमेरिका, यूरोप और ऑस्ट्रेलिया का रॉक आर्ट शामिल है। इन्हें भी पांच भागों मध्य, पश्चिम, पूर्व, दक्षिण और दक्षिणपूर्व एशिया में बांटा गया है। डॉ. मल्ला ने बताया कि सभी महादेशों के रॉक आर्ट की समानता यह है कि हर महादेश में इंसानों ने पहले जानवरों, फिर मानव और उसके बाद रोज-मर्रा के जीवन को अपनी कला में शामिल किया। भारत की बात करें तो एग्जिबीशन में इनमें पिक्टोग्राफ (पेंटिंग), पेट्रोगिलिफ (नक्काशी) और पेंटिड पेट्रोग्राफ (नक्काशी में पेंटिंग) आदि शामिल हैं। पिक्टोग्राफ ज्यादातर मध्यभारत, पेट्रोगिलिफ पहाड़ी व तटवर्ती इलाकों और पेंटिड पेट्रोग्राफ ओडिसा का रॉक आर्ट है।